Shani Chalisa

दोहा (Doha)

जय गणेश गिरजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहते दास समीर सुनाय के, करहु कृपा भगवान॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

चौपाई (Chaupai)

जय-जय श्री शनिदेव वाला। जयति जयति जगपति प्रतिपाला॥
जयति जयति जगवंद्य देवा। भक्ति भावित जन करत सेवा॥ 1 ॥
जयति जयति रविपुत्र प्रतापा। जाकी दृष्टि हरत संतापा॥
जयति जयति श्यामदेव अविकारी। अद्भुत कांति अलौकिक भारी॥ 2 ॥
चारि भुजा, तन श्याम विराजै। माथे मुकुट विशालत साजै॥
ध्वजा चमर है सुंदर धारी। सोहत वाहन गृध सवारी॥ 3 ॥
लोह अंगद, शूल कर सोहै। जन को निरखि हिया अति मोहै॥
विकट कटक मुख स्रोन महाला। कुटिल भृकुट कुटिल गति चाला॥ 4 ॥

सुरपति जबहिं विलोकत जाही। भागत तुरत छाड़ि गृह
ताही॥
रवि सुवनहिं सब भांति मनावे। तबहिं मनवांछित फल
पावे॥ 5 ॥
सोइ सुरपति जब बहु तप कीन्हा। तब शनि देव दर्शन दे
दीन्हा॥
रवि तनयहिं बहु भांति सराहा। तब निज धाम गमन अस
चाहा॥ 6 ॥
विक्रम चरित आप सब जाना। शनि प्रभाव यह सब जग
माना॥
नृप विक्रम पर जब शनि आया। चित्र मयूर गिला उर
हारा॥ 7 ॥
चोरी दोष नृपहिं सिर दीन्हा। हाथ पैर कटवा नृप लीन्हा॥
दुख सहि नृप कूंजा घर आया। तेहि घर तेलू दीपक
जलाया॥ 8 ॥
गाया राग मेघ नृप जबहीं। भासित भानु उदय सो
तबहीं॥
नृप को दीन्हों रूप अनूपा। शनि प्रसन्न भये तेहि भूपा॥
9 ॥
कंचन महल दियो नृप जाई। रंकहिं राव करें क्षण माहीं॥
हरिश्चंद्र नृप नारि बिकानी। शनि प्रभाव सब जग जानी॥
10 ॥
रेवत नृप को संकट भारी। भयो बिपति महं राज्य
दुखारी॥
शनि चरनहिं जब ध्यान लगाया। तजि दुख सुख नृप बहु
विधि पाया॥ 11 ॥

श्री रामहिं जब शनि दुख दीन्हा। बन महं वास जाइ नृप कीन्हा॥
रावण की मति फेरि बिगाड़ी। लंका सोइ पल महं छार कढ़ी॥ 12 ॥
शनि को कोप भयो जब भारी। पांडव द्रोपदी भये दुखारी॥
भये संकट महं भीम अर्जुना। शनि प्रभाव सब जग जाना॥ 13 ॥
गाधिसुत जब तप अति कीन्हा। शनि प्रभाव सब जग जानी लीन्हा॥
वशिष्ठ तपसि शनि को ध्याया। रिद्धि सिद्धि बहु विधि सो पाया॥ 14 ॥
नारद मुनि जब शनि ढिग आये। विनय करी बहु भांति सुनाये॥
सुनि प्रसन्न शनि देव सुजाना। दीन्हों ज्ञान परम प्रज्ञाना॥ 15 ॥
शनि मन्त्र जप करत जो कोई। ताको संकट कछू न होई॥
जपै जो नाम शनि के दस नामा। ताके पूरन होवैं कामा॥ 16 ॥
कोणस्थ, पिंगलो, बभ्रुः, कृष्णो, रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः, शनैश्चरो, मन्दः, पिप्पलादेन संस्तुतः॥ 17 ॥
इत्येतद् दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचित् भविष्यति॥ 18 ॥
जो यह पाठ करै चालीसा। तापर कृपा करैं जगदीशा॥

शनि ढैय्या जो जग महं होई। पाठ करै दुख रहै न कोई॥
19 ॥
साढ़े साती जो जग महं आवै। पाठ करै सो सुख बहु
पावै॥
जो यह पाठ करै मन लाई। शनि ढैय्या ताहि न फंसाई॥
20 ॥
प्रातकाल जो पाठ करैई। शनि कोप सो कबहूं न डराई॥
दीपक जलाइ धरै जो ध्याना। ताके काज करैं भगवाना॥
21 ॥
तेल तिल दान करे जो कोई। तापर कृपा शनि की होई॥
शनिवार को व्रत जो धारै। शनि संकट सो पार उतारे॥ 22
॥
काले वस्त्र दान जो देवै। शनि देव ताको फल देवै॥
लोहा दान करे जो ज्ञानी। ताकी विपत्ति हरैं शनिधानी॥
23 ॥
भोजन करै एक अविकारा। पाव निसदिन सुख अपारा॥
पाठ करे शनिवार जो कोई। ताकी मनोकामना पूरी होई॥
24 ॥
शनि चालीसा जो नित गावै। सो नर बहु सुख संपति
पावै॥
पुत्रहीन इच्छा कर जोई। निश्चय पुत्र ताहि गृह होई॥ 25 ॥
रोगी पाठ करै मन लाई। रोग दोष सब दूर नसाई॥
जो यह पाठ करे शत बारा। ताको पार करे करधारा॥ 26
॥

भक्ति भाव से जो कोई ध्यावै। सो मनवांछित फल पावै॥
शनि देव की आरती गावै। ताकी बिपति सकल मिट जावै॥
27 ॥
जय जय श्री शनिदेव दयाला। करहु कृपा अपने बालका॥
दुख दरिद्र सब दूर हटावो। सुमति शांति परिवार बढ़ावा॥ 28
॥
पाप कटै सब कटै कलेशा। जो ध्यावै शनिदेव शनेशा॥
ज्ञान बुद्धि धन बल दे दीजै। आपन जन अनुग्रह कीजै॥ 29
॥
दीन हीन सब शरण तुम्हारी। राखहु लाज हे शनि अविकारी॥
जय जय शनिदेव महाराज। सब जन के पूरन करो काज॥
30 ॥

दोहा (Closing Doha)

पाठ शनैश्चर देव को, कीन्हों 'विमल' तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, होय भवपार॥